18 जनवरी को एक बार फिर हम पिताश्री, प्रजापिता ब्रह्मा के बहुमुखी दिव्य जीवन का पुन: स्मरण कर देखेंगे कि उनके प्रेरणादायक जीवन से प्रभावित होकर हमें क्या दिव्य उपलब्धियां हुई। परंतु जब हम उनके जीवन से संबंधित संस्मरणों का मन में प्रादुर्भाव करते हैं तो देखते हैं कि इतनी सारी विशेषताएं इकट्ठी हो, आकर प्रगट होती हैं कि ये सोच पाना भी मुश्किल हो जाता है कि इनमें से किसको प्राथमिकता देकर हम उस पर विचार करें। अत: विशेषताओं के क्रम को एक ओर रखकर हम इस लघु संपादकीय में केवल एक-दो ही ऐसे बिंन्दुओं पर विचार करेंगे जिनसे उनके व्यक्तित्व, पुरुषार्थ या दिव्यता के कुछ पहलुओं का हमें सही महत्व ज्ञात होता है।

एक बात तो ये है कि जो लोग उनके निकट संपर्क में आए और जिन्होंने निष्पक्ष भाव से उनके मुखारविंद द्वारा ईश्वरीय ज्ञान का थोड़ा भी श्रवण कर उस पर मनन किया उनके जीवन में आशातीत परिवर्तन हुआ। जो पहले ये सोचे बैठे थे कि वे पवित्र बन ही नहीं सकते या अपनी किन्हीं आदतों और व्यसनों को छोड़ ही नहीं सकते या कि वे परमात्मा की अनुभूति कम से कम इस जीवन में तो कर ही नहीं सकते, उनके जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन का एक ज्वार-भाटा आ गया। न केवल उन्होंने अपने जीवन में पवित्रता का वरदान प्राप्त किया और ईश्वरानुभूति तथा आनंद का रसास्वादन किया बल्कि आगे चलकर वे दूसरों के जीवन में भी ऐसा परिवर्तन लाने के योग्य बनें। कुछेक वृत्तांत तो ऐसे हुए कि कुटुम्ब-परिवार के सभी सदस्यों में एक अनुपम परिवर्तन आया और उन्हें ऐसा अतीन्द्रिय सुख मिला तथा वे आनंद से ऐसे विभोर हो गए कि समस्त परिवार ने ही अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में जुटा दिया। उन्होंने तन-मन-धन सभी को विश्व सेवा के लिए प्रभु-समर्पण कर दिया। संसार भर के धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक इतिहास में ऐसा उदाहरण ढूंढ़ने से भी नहीं मिलेगा कि एक नहीं बल्कि कई परिवारों ने अपना सब कुछ समेटकर अपना सारा जीवन त्याग और तपस्या से व्यतीत करते हुए जन-जन को ईश्वरीय सुख की प्राप्ति के योग्य बनाने के कार्य में लगा दिया हो

पवित्रता, त्याग, तपस्या और सेवा की चतुर्मुखी प्रजापिता ब्रह्मा

-ब्र.कु.गंगाधर

और स्वयं अपने देह के नातों से अतीत होकर एक साथ रहे हों। भारत की स्वतंत्रता के संग्राम में कुछेक व्यक्तियों ने अपना सब-कुछ देश की स्वतंत्रता के लिए लगा दिया परंतु केवल दो-चार परिवारों को छोड़कर कुछ ऐसे परिवारों का उदाहरण नहीं है कि जिनके सभी सदस्य समर्पित हुए हों और इस पर भी ऐसा परिवार तो एक भी नहीं होगा कि जिसके सदस्य देहातीत दृष्टि से एक साथ कार्यरत रहे हों तथा जिन्होंने चर्म-चक्षुओं से दिखाई न देने वाले परमात्मा के प्रति स्वयं को समर्पित किया हो, नैतिक मूल्यों के विकास के लिए और जन-जन को प्रभु का संदेश देने के लिए अपने जीवन की भेंट की हो।

अन्यश्च, भारत की स्वतंत्रता संग्राम में तो केवल कुछ-एक महिलाओं ने भाग लिया था। अधिक संख्या में तो गांधी के ही व्यक्तित्व का ये प्रभाव था कि कुछ परिवार, कुछ महिलाएं और इतने सारे लोग उसमें जी-जान लगाकर कार्य कर रहे थे। परंतु प्रजापिता ब्रह्मा के व्यक्तित्व की तो बात ही निराली है। उन्होंने विशेषतया मातृ-शक्ति को जागृत किया, त्याग और तपस्या पर बल दिया, सेवा के संस्कार को उजागर किया और इन चर्म-चक्षुओं के सामने अदृश्य परंतु हर मन में छिपे हुए काम, क्रोध आदि शत्रुओं से संग्राम करने के लिए रूहानी वीरों को तैयार किया। ऐसा शक्ति-दल किसी ने तैयार किया हो और मनोविकारों का बिस्तरा गोल करने की चुनौती किसी ने दी हो तो कोई बताए? भारत से अंग्रेजों को निकालने के लिए 'भारत छोड़ो' नामक घोषणा की गई और आंदोलन छेड़ा गया परंतु मनोविकारों को 'विश्व छोड़ो' के उद्देश्य वाला एलान किसी ने नहीं किया। नि:संदेह, ब्रिटिश साम्राज्य भी शक्तिशाली था परंतु माया का साम्राज्य तो अत्यंत शक्तिशाली है - ऐसा कि सभी उसकी सेना में हैं। उस पर विजय पाने की दुदुम्भी तो प्रजापिता ब्रह्मा ही ने बजाई। यों संसार में अनेक धर्म-स्थापक हुए हैं जिनके व्यक्तित्व से काफी लोग प्रभावित हुए परंतु कौन है जिसने योजनाबद्ध रीति से कन्याओं-माताओं को अग्रिम पंक्ति में रखकर माया की मजबूत बेड़ियों को तोड़ने का व्रत लिया हो और स्थाई और सुचारू रूप से इस कार्य को आगे बढ़ाया हो?

विश्व के इतिहास में कई ऐसे भी धर्म-प्रचारक हुए हैं जिन्होंने -शेष पेज 8 पर

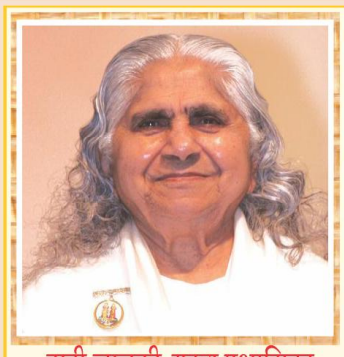

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

वह दिन दूर नहीं जब समस्त विश्व उन्हें जगतपिता स्वीकारेगा

जैसे हीरों को केवल जवाहरी ही परख सकता है, अन्य कोई नहीं, वैसे ही महान आत्माओं की महानताओं की परख कुछ सूक्ष्म दृष्टि वाले ही कर सकते हैं क्योंकि महान आत्माएं अपनी महानताओं का उल्लेख स्वयं नहीं करती और परखने के बाद उन महानताओं से अपने जीवन का श्रृंगार करने वाले और भी कम होते हैं। वर्तमान में संस्था की मुख्य प्रशासिका महान तपस्विनी दादी जानकी प्रारम्भ से ही 'पिता श्री ब्रह्मा' की महानताओं की ओर सूक्ष्म दृष्टि रखे हुए थीं। उनकी यह श्रेष्ठ आकांक्षा थी कि वे बाबा का सब कुछ चुरा लें। उनकी यह सच्ची लगन उन्हें साकार ब्रह्मा बाबा का साकार स्वरूप प्रदान कर सकीं। तो यहां प्रस्तुत है उन्हीं के भावों में उनकी वे महान योग्यताएं जो उन्होंने 'पिता श्री' जी से सीखीं -

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पिता-पन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगतपिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिली है कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसे ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना देकर बड़ा करें। भले ही हम जगत पिता तो नहीं हैं, परन्तु हैं तो उन्हें फालो करने वाले उनके ही महान बच्चे ..

दूसरी मुख्य बात- मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सब कुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाये रखना व बच्चों को स्वमान देना-यही मानवता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्तापन का तनिक भी भान न आये।

हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्मति का चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

मैने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का जरा भी अहंकार न रहे? यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखा।

बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसे होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते-ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थी। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नजर नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है।

बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को रखें, अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो नारायणी नशा भी हो।

बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉर्टी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया।

बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देता था। सदा यही संकल्प रखता था कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिवबाबा से एनर्जी खींचते रहते थे। मुझे कभी-कभी सोलह-सोलह घण्टे भी कार्यक्रमों में रहना पड़ता है, परन्तु मुझे नहीं लगता है कि मेरी एनर्जी नष्ट हो रही है। सदा शक्ति बढ़ने का ही अनुभव रहता है। इस वर्ष जबकि मेरी आयु 70 वर्ष की हो गई है, एक ही वर्ष में मैं 70 बार हवाई जहाज में चढ़ी होंगी, परन्तु इस वर्ष जैसी स्वस्थ मैं कभी नहीं रही। मेरा यही अनुभव रहा कि रात-दिन सेवा में रहने से मेरी शक्ति बढ़ रही है।

इसी तरह जब मैं किसी बड़े प्रोग्राम में होती हूँ, तो मुझे कभी हीन भावना नहीं आती। टॉपिक चाहे कैसा भी हो, जब तक दूसरे वक्ता भाषण करते हैं, मैं योग-युक्त होकर साइलेंस की शक्ति इकट्ठी करती रहती हूं। यद्यपि मैं उनकी भाषा नहीं समझती, तो भी मुझे ये ख्याल नहीं आते कि इन्होंने क्या बोला या मैं अच्छा बोलूं, पता नहीं उन्हें अच्छा लगेगा या नहीं? मुझे इस तरह की कोई भी उलझन नहीं होती। मैं अपनी श्रेष्ठ स्थिति में रहती हूं और सब कुछ श्रेष्ठ होता है। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी है, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें।

मैने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का जरा भी अहंकार न रहे? यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखा।

सेवा में मैं निमित्त बनी हुई आत्माओं का अधिक ध्यान रखती हूं, यही बाबा से सीखा है। मैं ही करूं-यह संकल्प कम रहता है। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। जो हुआ वो भी याद नहीं, जो होगा उसकी भी चिन्ता नहीं। सेवा के लिए मन में उलझन नहीं, उमंग अवश्य है। संशय भी नहीं रहता कि सफलता होगी या नहीं।

मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। सार में मैं कहूं-न कोई इच्छा है, न मैं भारी हूं। प्रोग्राम बनें, यह इच्छा नहीं, और बने तो कोई भारीपन नहीं। हम कर ही नहीं रहे हैं, वही करा रहा है, अत: महिमा उसी की करो।

अन्त में मैं कहूंगी कि भगवान के दर पर कोई भी अभिमान नहीं रख सकता, बाबा ने अपनी निर्माणता से हमें यही सिखाया। यहां पर तो बाप समान निमित्त व निर्माण व्यक्ति ही जिन्दा रह सकता है अर्थात् सफल होता है। तो स्मृति दिवस ज्यों-ज्यों समीप आता है, बाबा का सम्पूर्ण चित्र सामने स्पष्ट हो जाता है, उनका प्यार श्रेष्ठ प्रेरणाएं देता रहता है। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।